

केस अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. सुनन्दा को 30 नवम्बर को सुबह 8:20 पर बच्चा पैदा हुआ। प्रसव के समय 8 माह 5 दिन का गर्भकाल पूरा हो चुका था। शिशु का वज़न 1 कि. 950 ग्रा. था। शिशु पहले 6 दिनों तक बिल्कुल ठीक था। सातवें दिन जब आशा वहाँ गई, उसने पाया कि शिशु ने स्तनपान करना बंद कर दिया है और उसका पेट फूला हुआ है। उसकी साँस तो ठीक चल रही थी, पर उसका रोना कमजोर था। उसका वज़न 1 कि 900 ग्रा. था। आशाने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया, क्योंकि शिशु ने दूध पीना बंद कर दिया था और उसका पेट फूला हुआ था।

आप सबसे पहले क्या करेंगी ?

माता-पिता को बताएँगे कि शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) है जो कि एक भयंकर प्रकार का संक्रमण है। इसके लिए उसे अस्पताल ले जाना चाहिए।

यदि माता-पिता उसे अस्पताल नहीं ले जा सकते, तो आप (आशा) घर पर ही सुई और पीने की दवा देकर उसका इलाज कर सकती हैं। माता-पिता को यह भी बताया जाना चाहिए कि इलाज के बाद भी शिशु मर सकता है और आशाइसके लिए जिम्मेदार नहीं होगी। घर पर इलाज शुरू करने से पहले, माता-पिता से पूर्व स्वीकृति वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करवा लेना आवश्यक है।

शिशु का क्या उपचार किया जाएगा ? (कितनी खुराक/कितने दिन)

जेन्टामाइसिन की सुई 6 मि.ग्रा. दिन में एक बार 10 दिन तक

कोट्रिमाक्सोजॉल 1/4 चम्मच दिन में दो बार 10 दिन तक

आप शिशु को देखने कितनी बार जाएँगी ?

दिन में दो बार, 10 दिन तक।

आप माता-पिता को शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में क्या बताएँगी ?

1. शिशु के शरीर को गर्म रखें।
2. 2-2 घंटे बाद स्तनपान कराएँ।
3. शिशु में खतरे वाले लक्षण देखते रहें और यदि उसकी हालत और खराब हो जाए तो तुरंत आशाको बुलाएँ।
2. विमल ने जन्म के अनुमानित समय से 1 हफ्ते बाद शिशु को जन्म दिया। उसका वज़न 2.9 कि.ग्रा. था। वह तन्दुरुस्त और स्वस्थ था। आशाने विमल को उसे स्तनपान कराने में मदद की और 1 घंटे पर उसकी जाँच की। दसवें दिन माँ ने बताया कि शिशु ठंडा पड़ रहा है। उसका तापमान 93°F पाया गया। उसका वज़न 3 कि.ग्रा. था। वह दूध भी पी रहा था और रो भी रहा था, पर उसकी छाती अंदर को धँसी थी। उसका पेट मुलायम था और हाथ-पैर भी ठीक थे। उसकी नाल ठीक हो चुकी थी। आशाने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया।

आप सबसे पहले क्या करेंगी।

माता-पिता को बताएँगे कि शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) है। उन्हें सलाह देंगे कि शिशु को अस्पताल ले जाएँ। यदि ऐसा करना संभव न हो तो बताएँ कि घर पर रहकर ही शिशु का इलाज हो सकता है और इसके लिए उनसे पूर्व स्वीकृति लेने वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करवा लें। माता पिता से सम्मान पूर्वक बर्ताव करें, पर उन्हें स्थिति की गंभीरता के बारे में अवश्य जानकारी दें।

शिशु के उपचार करने के लिए, पूर्व स्वीकृति लेने वाले फॉर्म पर माता-पिता से हस्ताक्षर क्यों करवाना चाहिए ?

माता-पिता को बताया जाना चाहिए कि सेप्सिस (जन्तुदोष) एक गंभीर प्रकार का संक्रमण है। इलाज के बाद भी शिशु की मौत हो सकती है। शिशु को घर पर रखकर इलाज करवाने के लिए माता-पिता ही जिम्मेदार होंगे। उन्हें यह भी बताएँ कि इलाज के लिये एक सुई और पीने की दवा दी जाती है। कभी-कभी सुई लगने से शिशु को कुछ समस्या हो सकती है, पर इसके लिए आशा दोषी नहीं है।

आप क्या उपचार देंगी ? (कारण लिखें)

जेन्टामाइसिन सुई 15 मि.ग्रा. दिन में एक बार, 7 दिन तक

कोट्रिमॉक्सेजोल 1/4 चम्मच दिन में दो बार, 7 दिन तक

क्योंकि शिशु का वज़न 3 कि.ग्रा. है और वह ठीक समय पर जन्मा है।

लौट जाने से पहले आप माता-पिता को क्या-क्या बताएँगी ?

1. शिशु के शरीर को गर्म रखें।
2. 2-2 घंटे बाद स्तनपान कराएँ।
3. शिशु में खतरे वाले लक्षण देखते रहें और यदि उसकी हालत और खराब हो जाए तो तुरंत आशाको बुलाएँ।

आप कितनी बार शिशु को देखने जाएँगी ?

दिन में दो बार 7 दिन तक।

3. ताराबाई को चौथा बच्चा होने वाला था। शिशु का जन्म 7 महीने 27 दिन के गर्भकाल पूरा होने पर हुआ और उसका वज़न 1.65 कि.ग्रा. था। शिशु ने 14 दिन तक स्तनपान नहीं किया। अठ्ठाईसवें दिन उसका वज़न 2.250 कि.ग्रा. हो गया था। आशाने दूसरे महीने में शिशु के घर जाना जारी रखा और उसका वज़न बढ़ाने की और अधिक कोशिश की। पैतालीसवें दिन शिशु के हाथ पैर लुंज पुंज थे और माँ ने बताया कि शिशु का शरीर छूने पर ठंडा लगता है। आपने उसका तापमान लिया और 94° फ़ै. (34.4° सें.) पाया और आशाने सेप्सिस (जन्तुदोष) का निदान किया।

शिशु में जन्म के समय खतरे वाले क्या लक्षण दिखाई दिए ?

समय से पूर्व जन्मा। कम वजन का और स्तनपान नहीं कर पा रहा।

सेप्सिस (जन्तुदोष) की पहचान के लिए कौन से लक्षण ध्यान में रखे गए ?

शिशु के हाथ पैर लुंज पुंज और शरीर ठंडा (हाइपोथर्मिया)

आप माता-पिता को सेप्सिस (जन्तुदोष) और इसके उपचार के लिए पूर्व स्वीकृति लेने के बारे में क्या बताएँगी ?

माता-पिता को बतायेंगे कि शिशु को सेप्सिस (जन्तुदोष) है जोकि एक गंभीर प्रकार का संक्रमण है। उन्हें सलाह देंगे कि शिशु को अस्पताल ले जाएँ। यदि ऐसा करना संभव न हो तो शिशु को घर पर रखकर ही उसके इलाज के बारे में जानकारी दें और पूर्व स्वीकृति वाले फॉर्म पर हस्ताक्षर करवाएँ।

उपचार के लिए आप कितनी खुराक देंगी और कितने दिनों तक ?

जेन्टामाइसिन की सुई 9 मि.ग्रा. दिन में एक बार, 10 दिन तक

कोट्रिमाक्सोजॉल 1/4 चम्मच दिन में दो बार, 10 दिन तक

शिशु की घरेलू देखभाल के बारे में आप माता-पिता को क्या बताएँगी ?

शिशु को जन्म से ही खतरे वाले लक्षण हैं। नीयत समय से पूर्व जन्में शिशुओं की ज्यादा देखभाल करनी पड़ती है। इसे सेप्सिस (जन्तुदोष) भी हो गया है अतः निम्न बातों का ध्यान रखें :

1. शिशु का शरीर गर्म रखें।
2. उसे 2-2 घंटे पर स्तनपान कराएँ।
3. उसमें खतरे वाले लक्षण देखती रहें और यदि हालत अधिक बिगड़े , तो तुरंत आशाको बुलाएँ।